

व्याकरणं रचना च

(क) सन्धिः - हल्सन्धिः, विसर्गसन्धिः

(अ) हल्सन्धिः (व्यञ्जनसन्धि) :

हल् (व्यञ्जन) के बाद स्वर या व्यञ्जन के आने पर व्यञ्जन में जो विकार (परिवर्तन) होता है उसे हल् सन्धि कहते हैं। यहाँ इस सन्धि के कुछ प्रमुख सूत्र सरल भाषा में समझाये जाते हैं।

1. स्तोः श्चुना श्चुः - स् तथा तवर्ग (तु) के स्थान में श् तथा चवर्ग हो जाता है यदि इनका योग श् और चवर्ग से हो।

उदाहरण - स् का श् - रामस् (रामः) + चकार = रामश्चकार

स्वेः (स्वेस्) + छटा = स्वेश्छटा।

त् का च् - उत् + चारणम् = उच्चारणम्।

द् का ज् - तद् + जलम् = तज्जलम्।

उत् (उद्) + ज्वलः = उज्ज्वलः।

न् का ञ् - शत्रून् + जयति = शत्रूञ्जयति।

त् का च् - तत् + शास्त्रम् = तच्छास्त्रम्।

(यहाँ श् का छ् शश्छोऽटि से हो गया है)

2. झलां जशोऽन्ते - वर्ग के प्रथम वर्ण (क् च ट् त् प्) का तृतीय वर्ण (ग् ज् इ द् ब्) हो जाता है यदि बाद में स्वर वर्ण अथवा वर्ग का तृतीय वर्ण, चतुर्थ वर्ण अथवा य् र् ल् व् ह रहे।

हिरण -

- दिक् + अम्बरः = दिगम्बरः
- वाक् + ईशः = वागीशः
- अच् + अन्तः = अजन्तः
- षट् + आननः = षडाननः
- जगत् + ईशः = जगदीशः
- सुप् + अन्तः = सुबन्तः
- तत् + यशः = तद्यशः
- दिक् + गजः = दिग्गजः

यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा - वर्ग के प्रथम वर्ण का विकल्प से तृतीय या पञ्चम वर्ण हो जाता है यदि बाद में पञ्चम वर्ण आये । जैसे -

दिक् + नागः = दिग्नागः, दिङ्नागः

(टिप्पणी - यद्यपि व्याकरण की दृष्टि से तृतीय और पञ्चम दोनों वर्णों का विधान है किन्तु व्यवहार में पञ्चम वर्ण ही प्रयुक्त होता है ।)

- उत् + नतिः = उन्नतिः
- षट् + मुखः = षण्मुखः
- प्राक् + मुखः = प्राङ्मुखः (पूर्व मुँह वाला)
- जगत् + नाथः = जगन्नाथः
- सत् + मित्रम् = सन्मित्रम्

तोलि - तवर्ग के बाद ल आये तो तवर्ग का भी ल हो जाता है । जैसे -

तत् + लाभः = तल्लाभः

तद् + लक्षणम् = तल्लक्षणम्

महान् + लाभः = महाल्लाभः

विपद् + लवः = विपल्लवः (विपत्ति का अल्पमात्र)

5. मोऽनुस्वारः - पद के अन्त में अवस्थित म् का अनुस्वार हो जाता है यदि बाद में कोई व्यञ्जन रहे । जैसे -

हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे

सम् + वादः = संवादः

प्रियम् + वदा = प्रियंवदा

(यदि पदान्त म् के बाद वर्गों के वर्ण हों - क् से लेकर म् तक - तो उन वर्गों के अन्तिमाक्षर भी हो जाता है) । जैसे -

शम् + करः = शङ्करः

गृहम् + जगाम = गृहञ्जगाम

(पद के भीतर यह अनिवार्य है ।)

6. शश्छोऽटि - तवर्ग के बाद श् का छ् हो जाता है यदि उस श् के बाद कोई स्वर्ण हो । जैसे -

तत् + शिवः = तच्छिवः

तत् + शास्त्रम् = तच्छास्त्रम्

महान् + शब्दः = महाञ्छब्दः

धावन् + शशः = धावञ्छशः

खरि च - वर्ग के तृतीय और चतुर्थ वर्ण का प्रथम वर्ण हो जाता है यदि बाद में वर्ग का प्रथम या द्वितीय वर्ण हो अथवा श् ष् स् हो ।

जैसे -

दिग् + पालः = दिक्पालः

विपद् + कालः = विपत्कालः

सम्पद् + समयः = सम्पत्समयः

(आ) विसर्गसन्धिः

विसर्ग का परिवर्तन यदि स्वर या व्यञ्जन के संयोग से होता है, तो इसे विसर्ग सन्धि कहते हैं इसके कुछ प्रमुख सूत्र दिये जाते हैं ।

1. विसर्जनीयस्य सः - खर् प्रत्याहार के पूर्व विसर्ग का स् हो जाता है किन्तु यह केवल त् थ् के पूर्व ही होता है । च् छ् के पूर्व उस स् का श् और ट् ठ् के पूर्व उसका ष् होता है । जैसे -

रामः + तिष्ठति = रामस्तिष्ठति

इतः + ततः = इतस्ततः

नद्याः + तीरम् = नद्यास्तीरम्

गौः + चलति = गौश्चलति

धनुः + टंकारः = धनुष्टंकारः

2. हशि च - अकार के बाद रु (स् या विसर्ग) का "उ" हो जाता है यदि बाद में हश् प्रत्याहार (ह य् व् र् ल्, वर्गों के तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण) के वर्ण आयें। बाद में अ + उ = ओ हो जाता है। जैसे -

मनः + रथः = मनोरथः

सरः + वरः = सरोवरः

यशः + धनः = यशोधनः

पुरः + हितः = पुरोहितः

रामः + गच्छति = रामो गच्छति

तपः + वनम् = तपोवनम्

3. अतो रोरप्लुतादप्लुते - अकार के बाद रु (स् या विसर्ग) का 'उ' कार हो जाता है यदि बाद में अ हो। यहाँ अ + उ = ओ हो जाता है तथा स्वरसन्धि के पूर्वरूप एकादेश के अनुसार ओ ही बच जाता है। जैसे -

रामः + अस्ति = रामोऽस्ति

बालकः + अयम् = बालकोऽयम्

सिंहः + अपि = सिंहोऽपि

सः + अवदत् = सोऽवदत्

4. रो रि - विसर्ग के स्थान में आर हुए र् का लोप हो जाता है यदि बाद में भी

हो । ऐसी स्थिति में विसर्ग के पूर्ववर्ती स्वर का दीर्घ हो जाता है । जैसे -

निः + रवः = नीरवः

निः + रोगः = नीरोगः

पुनः + रमते = पुनारमते

शम्भुः + राजते = शम्भू राजते

अभ्यासः

1. निम्नलिखित सूत्रों की व्याख्या करें -

झलां जशोऽन्ते, हशि च, मोऽनुस्वारः, तोर्लि, खरि च, रो रि ।

2. निम्नलिखित पदों का सन्धिविच्छेद करें -

रामस्तिष्ठति, धनुष्टंकारः, उन्नतिः, जगन्नाथः, सन्मित्रम्, शङ्करः, तच्छिवः,
मनोरथः, दिग्गजः, वागीशः ।

3. हल् सन्धि किसे कहते हैं ? सोदाहरण लिखें ।

4. विसर्ग सन्धि किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित लिखें ।

5. निम्नलिखित पदों की सन्धि करें -

अच् + अन्तः =

षट् + आननः =

तत् + यशः =

इतः + ततः =

गौः + चलति = |

सरः + वरः = |

पुरः + हितः = |

तपः + वनम् = |

सः + अवदत् = |

निः + रोगः = |

(ख) शब्दरूपाणि

सकारान्त 'विद्वस्' (विद्वान्)

| विभक्तिः | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|----------|-------------|---------------|-----------------|
| प्रथमा | विद्वान् | विद्वान्सौ | विद्वान्सः |
| द्वितीया | विद्वान्सम् | विद्वान्सौ | विदुषः |
| तृतीया | विदुषा | विद्वद्भ्याम् | विद्वद्भिः |
| चतुर्थी | विदुषे | विद्वद्भ्याम् | विद्वद्भ्यः |
| पंचमी | विदुषः | विद्वद्भ्याम् | विद्वद्भ्यः |
| षष्ठी | विदुषः | विदुषोः | विदुषाम् |
| सप्तमी | विदुषि | विदुषः | विद्वत्सु |
| सम्बोधन | हे विद्वन् | हे विद्वान्सौ | हे विद्वान्सः ! |

'अस्मद्' (मैं) शब्द

| विभक्तिः | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|----------|--------|-----------|-----------|
| प्रथमा | अहम् | आवाम् | वयम् |
| द्वितीया | माम् | आवाम् | अस्मान् |
| तृतीया | मया | आवाभ्याम् | अस्माभिः |
| चतुर्थी | मह्यम् | आवाभ्याम् | अस्मभ्यम् |
| पंचमी | मत् | आवाभ्याम् | अस्मत् |
| षष्ठी | मम | आवयोः | अस्माकम् |
| सप्तमी | मयि | आवयोः | अस्मासु |

'युष्मद्' (तुम्) शब्द

| विभक्तिः | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|----------|---------|------------|------------|
| प्रथमा | त्वम् | युवाम् | यूयम् |
| द्वितीया | त्वाम् | युवाम् | युष्मान् |
| तृतीया | त्वया | युवाभ्याम् | युष्माभिः |
| चतुर्थी | तुभ्यम् | युवाभ्याम् | युष्मभ्यम् |
| पंचमी | त्वत् | युवाभ्याम् | युष्मत् |
| षष्ठी | तव | युवयोः | युष्माकम् |
| सप्तमी | त्वयि | युवयोः | युष्मासु |

'किम्' (कौन, क्या)

पुंल्लिंग

| विभक्तिः | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|----------|---------|----------|--------|
| प्रथमा | कः | कौ | के |
| द्वितीया | कम् | कौ | कान् |
| तृतीया | केन | काभ्याम् | कैः |
| चतुर्थी | कस्मै | काभ्याम् | केभ्यः |
| पंचमी | कस्मात् | काभ्याम् | केभ्यः |
| षष्ठी | कस्य | कयोः | केषाम् |
| सप्तमी | कस्मिन् | कयोः | केषु |

'किम्' (कौन, क्या)

स्त्रीलिंग

| विभक्ति: | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|----------|---------|----------|--------|
| प्रथमा | का | के | काः |
| द्वितीया | काम् | के | काः |
| तृतीया | कया | काभ्याम् | काभिः |
| चतुर्थी | कस्यै | काभ्याम् | काभ्यः |
| पंचमी | कस्याः | काभ्याम् | काभ्यः |
| षष्ठी | कस्याः | कयोः | कासाम् |
| सप्तमी | कस्याम् | कयोः | कासु |

'किम्' (कौन, क्या)

नपुंसकलिंग

| विभक्ति: | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|----------|---------|----------|--------|
| प्रथमा | किम् | के | कानि |
| द्वितीया | किम् | के | कानि |
| तृतीया | केन | काभ्याम् | कैः |
| चतुर्थी | कस्मै | काभ्याम् | केभ्यः |
| पंचमी | कस्मात् | काभ्याम् | केभ्यः |
| षष्ठी | कस्य | कयोः | केषाम् |
| सप्तमी | कस्मिन् | कयोः | केषु |

‘इदम्’ (यह)

पुंल्लिंग

| विभक्तिः | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|----------|---------|---------|--------|
| प्रथमा | अयम् | इमौ | इमे |
| द्वितीया | इमम् | इमौ | इमान् |
| तृतीया | अनेन | आभ्याम् | एभिः |
| चतुर्थी | अस्मै | आभ्याम् | एभ्यः |
| पंचमी | अस्मात् | आभ्याम् | एभ्यः |
| षष्ठी | अस्य | अनयोः | एषाम् |
| सप्तमी | अस्मिन् | अनयोः | एषु |

‘इदम्’ (यह)

स्त्रीलिंग

| विभक्तिः | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|----------|---------|---------|--------|
| प्रथमा | इयम् | इमे | इमाः |
| द्वितीया | इमाम् | इमे | इमाः |
| तृतीया | अनया | आभ्याम् | आभिः |
| चतुर्थी | अस्यै | आभ्याम् | आभ्यः |
| पंचमी | अस्याः | आभ्याम् | आभ्यः |
| षष्ठी | अस्याः | अनयोः | आसाम् |
| सप्तमी | अस्याम् | अनयोः | आसु |

'इदम्' (यह)

नपुंसकलिङ्ग

| विभक्तिः | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|----------|---------|---------|--------|
| प्रथमा | इदम् | इमे | इमानि |
| द्वितीया | इदम् | इमे | इमानि |
| तृतीया | अनेन | आभ्याम् | एभिः |
| चतुर्थी | अस्मै | आभ्याम् | एभ्यः |
| पंचमी | अस्मात् | आभ्याम् | एभ्यः |
| षष्ठी | अस्य | अनयोः | एषाम् |
| सप्तमी | अस्मिन् | अनयोः | एषु |

(ग) धातुरूपाणि

कृ धातु (करना, to do) परस्मैपदी

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|-------------|-------|---------|-----------|
| प्रथम पुरुष | करोति | कुरुतः | कुर्वन्ति |
| मध्यम पुरुष | करोषि | कुरुथः | कुरुथ |
| उत्तम पुरुष | करोमि | कुर्वः | कुर्मः |

लृट्लकारः (भविष्यत् काल)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|-------------|-----------|-----------|------------|
| प्रथम पुरुष | करिष्यति | करिष्यतः | करिष्यन्ति |
| मध्यम पुरुष | करिष्यसि | करिष्यथः | करिष्यथ |
| उत्तम पुरुष | करिष्यामि | करिष्यावः | करिष्यामः |

चि धातु (चुनना) परस्मैपदी

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|-------------|--------|----------------|----------------|
| प्रथम पुरुष | चिनोति | चिनुतः | चिन्वन्ति |
| मध्यम पुरुष | चिनोषि | चिनुथः | चिनुथ |
| उत्तम पुरुष | चिनोमि | चिनुवः, चिन्वः | चिनुमः, चिन्मः |

लृट्लकारः (भविष्यत् काल)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|-------------|----------|----------|-----------|
| प्रथम पुरुष | चेष्यति | चेष्यतः | चेष्यन्ति |
| मध्यम पुरुष | चेष्यसि | चेष्यथः | चेष्यथ |
| उत्तम पुरुष | चेष्यामि | चेष्यावः | चेष्यामः |

लङ्लकारः (अनद्यतनभूतकाल)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|-------------|---------|----------------|----------------|
| प्रथम पुरुष | अचिनोत् | अचिनुताम् | अचिन्वन् |
| मध्यम पुरुष | अचिनोः | अचिनुतम् | अचिनुत |
| उत्तम पुरुष | अचिनवम् | अचिनुव, अचिन्व | अचिनुम, अचिन्म |

विधिलिङ् (चाहिए)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|-------------|----------|------------|---------|
| प्रथम पुरुष | चिनुयात् | चिनुयाताम् | चिनुयुः |
| मध्यम पुरुष | चिनुयाः | चिनुयातम् | चिनुयात |
| उत्तम पुरुष | चिनुयाम् | चिनुयाव | चिनुयाम |

लोट्लकारः (अनुज्ञा)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|-------------|---------|----------|-----------|
| प्रथम पुरुष | चिनोतु | चिनुताम् | चिन्वन्तु |
| मध्यम पुरुष | चिनु | चिनुतम् | चिनुत |
| उत्तम पुरुष | चिनवानि | चिनवाव | चिनवाम |

'प्रच्छ' = पूछना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमान काल)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|-------------|----------|----------|-----------|
| प्रथम पुरुष | पृच्छति | पृच्छतः | पृच्छन्ति |
| मध्यम पुरुष | पृच्छसि | पृच्छथः | पृच्छथ |
| उत्तम पुरुष | पृच्छामि | पृच्छावः | पृच्छामः |

लृट्लकारः (भविष्यत् काल)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|-------------|-------------|-------------|--------------|
| प्रथम पुरुष | प्रक्ष्यति | प्रक्ष्यतः | प्रक्ष्यन्ति |
| मध्यम पुरुष | प्रक्ष्यसि | प्रक्ष्यथः | प्रक्ष्यथ |
| उत्तम पुरुष | प्रक्ष्यामि | प्रक्ष्यावः | प्रक्ष्यामः |

लङ्लकारः (अनद्यतनभूतकाल)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|-------------|----------|------------|----------|
| प्रथम पुरुष | अपृच्छत् | अपृच्छताम् | अपृच्छन् |
| मध्यम पुरुष | अपृच्छः | अपृच्छतम् | अपृच्छत |
| उत्तम पुरुष | अपृच्छम् | अपृच्छाव | अपृच्छाम |

विधिलिङ् (चाहिए)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|-------------|-----------|------------|-----------|
| प्रथम पुरुष | पृच्छेत् | पृच्छेताम् | पृच्छेयुः |
| मध्यम पुरुष | पृच्छेः | पृच्छेतम् | पृच्छेत |
| उत्तम पुरुष | पृच्छेयम् | पृच्छेव | पृच्छेम |

लोट्लकारः (अनुज्ञा)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|-------------|----------|-----------|-----------|
| प्रथम पुरुष | पृच्छतु | पृच्छताम् | पृच्छन्तु |
| मध्यम पुरुष | पृच्छ | पृच्छतम् | पृच्छत |
| उत्तम पुरुष | पृच्छानि | पृच्छाव | पृच्छाम |

‘ग्रह् धातु (लेना, to take)’ (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|-------------|----------|----------|-----------|
| प्रथम पुरुष | गृह्णाति | गृह्णीतः | गृह्णन्ति |
| मध्यम पुरुष | गृह्णासि | गृह्णीथः | गृह्णीथ |
| उत्तम पुरुष | गृह्णानि | गृह्णीवः | गृह्णीमः |

लृट्लकारः (भविष्यत् काल)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|-------------|-------------|-------------|--------------|
| प्रथम पुरुष | ग्रहीष्यति | ग्रहीष्यतः | ग्रहीष्यन्ति |
| मध्यम पुरुष | ग्रहीष्यसि | ग्रहीष्यथः | ग्रहीष्यथ |
| उत्तम पुरुष | ग्रहीष्यामि | ग्रहीष्यावः | ग्रहीष्यामः |

लङ्लकारः (अनद्यतनभूतकाल)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|-------------|-----------|-------------|----------|
| प्रथम पुरुष | अगृह्णात् | अगृह्णीताम् | अगृह्णन् |
| मध्यम पुरुष | अगृह्णाः | अगृह्णीतम् | अगृह्णीत |
| उत्तम पुरुष | अगृह्णाम् | अगृह्णीव | अगृह्णीम |

विधिलिङ् (चाहिए)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|-------------|------------|--------------|-----------|
| प्रथम पुरुष | गृह्णीयात् | गृह्णीयाताम् | गृह्णीयुः |
| मध्यम पुरुष | गृह्णीयाः | गृह्णीयातम् | गृह्णीयात |
| उत्तम पुरुष | गृह्णीयाम् | गृह्णीयाव | गृह्णीयाम |

लोट्लकारः (अनुज्ञा)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|-------------|----------|------------|-----------|
| प्रथम पुरुष | गृह्णातु | गृह्णीताम् | गृह्णन्तु |
| मध्यम पुरुष | गृहाण | गृह्णीतम् | गृह्णीत |
| उत्तम पुरुष | गृह्णानि | गृह्णाव | गृह्णाम |

हन् = मारना, पीटना (to kill, assault)

लट्लकारः (परस्मैपदी) वर्तमान काल

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|-------------|-------|---------|---------|
| प्रथम पुरुष | हन्ति | हतः | घ्नन्ति |
| मध्यम पुरुष | हसि | हथ | हथ |
| उत्तम पुरुष | हन्मि | हन्वः | हन्मः |

लृट्लकारः (भविष्यत् काल)

| | | | |
|-------------|-----------|-----------|------------|
| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
| प्रथम पुरुष | हनिष्यति | हनिष्यतः | हनिष्यन्ति |
| मध्यम पुरुष | हनिष्यसि | हनिष्यथः | हनिष्यथ |
| उत्तम पुरुष | हनिष्यामि | हनिष्यावः | हनिष्यामः |

लङ्लकारः (अनद्यतनभूतकाल)

| | | | |
|-------------|-------|---------|--------|
| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
| प्रथम पुरुष | अहन् | अहताम् | अघ्नन् |
| मध्यम पुरुष | अहन् | अहतम् | अहत |
| उत्तम पुरुष | अहनम् | अहन्व | अहन्म |

विधिलिङ् (चाहिए)

| | | | |
|-------------|---------|-----------|--------|
| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
| प्रथम पुरुष | हन्यात् | हन्याताम् | हन्युः |
| मध्यम पुरुष | हन्याः | हन्यातम् | हन्यात |
| उत्तम पुरुष | हन्याम् | हन्याव | हन्याम |

लोट्लकारः (अनुज्ञा)

| | | | |
|-------------|---------|--------|---------|
| | द्विवचन | बहुवचन | |
| एकवचन | | | |
| प्रथम पुरुष | हन्तु | हताम् | घ्नन्तु |
| मध्यम पुरुष | जहि | हतम् | हत |
| उत्तम पुरुष | हनानि | हनाव | हनाम |

(घ) कारकाणि

1. कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् - कर्ता किसी कर्म के द्वारा जिस वस्तु या व्यक्ति को संयोजित करता है (अभिप्रैति) वह सम्प्रदान है। जिसके उद्देश्य से कोई क्रिया होती है वह सम्प्रदान है। जैसे -

विप्राय गां ददाति । विप्रं के उद्देश्य से गाय (कर्म) को दिया जा रहा है । शिशवे कथां कथयति । मूर्खाय उपदेशो न दातव्यः । सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है (चतुर्थी सम्प्रदाने) । इसीलिए यहाँ चतुर्थी विभक्ति लगी है ।

2. रुच्यर्थानां प्रीयमाणः - रुचि (अनुराग या प्रीति) के अर्थ वाली क्रियाओं के प्रयोग में प्रसन्न होने वाला व्यक्ति सम्प्रदान कहा जाता है। अतः उससे भी चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे - बालकाय मोदकः रोचते (लड़के को मिठाई अच्छी लगती है) । नारदाय कलहः रोचते (नारद को विवाद पसन्द है) ।

3. ध्रुवमपायेऽपादानम् - विच्छेद की स्थिति में जहाँ से विच्छेद आरम्भ होता है उस स्थान को अपादान कारक कहते हैं। अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे -

वृक्षात् पतति पत्रम् । यह अपादान कभी-कभी अस्थिर भी हो सकता है। जैसे - धावतः अश्वात् पतति । यहाँ दौड़ता हुआ घोड़ा अपादान है क्योंकि वहीं से विच्छेद आरम्भ हो रहा है। अन्य उदाहरण - अहं ग्रामात् आगतः अस्मि ।

4. भीत्रार्थानां भयहेतुः - भय और त्राण (रक्षा) अर्थ वाली क्रियाओं के प्रयोग में भय का हेतुरूप कारक अपादान है। उससे पञ्चमी विभक्ति होती है।

जैसे -

चौरात् भीतः अस्ति (चोर से डरा हुआ है) ।

धर्मः नरकात् त्रायते । ज्ञानं पापात् रक्षति ।

5. आख्यातोपयोगे - आख्याता = उपदेशकः । उपयोगः =
नियमपूर्वक-विद्या-स्वीकारः।

यदि नियमपूर्वक उपदेश ग्रहण करने का अर्थ हो तो उपदेशक को अपादान कारक कहा जाता है । इसलिए इससे पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे -
शिक्षकात् व्याकरणं शृणोति । उपाध्यायात् अधीते । कभी-कभी सुनने का अर्थ हो (नियमपूर्वक नहीं) तो षष्ठी विभक्ति (सम्बन्ध सामान्य के कारण) होती है । जैसे -
नटस्य गाथां शृणोति (नट से लोकगीत सुनता है) ।

6. षष्ठी शेषे - कारकों तथा प्रातिपदिकार्थ से भिन्न स्व-स्वामिभाव आदि सम्बन्ध को 'शेष' कहा गया है (उक्तादन्यः शेषः) । इसलिए सम्बन्ध सामान्य में षष्ठी विभक्ति होती है । जैसे -

राज्ञः पुत्रः (राजा का पुत्र) । रामस्य कथा (राम की कथा) ।

मूर्खस्य उपहासः । दुग्धस्य माधुर्यम् (दूध की मिठास) ।

7. कर्तृकर्मणोः कृत्ति - कृत् प्रत्यय से बने हुए शब्द (कृदन्त शब्द) का प्रयोग हो तो उसके कर्ता और कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है । जैसे - दुग्धस्य पानम् । यहाँ पान शब्द कृदन्त है, उसके कर्म दुग्ध से षष्ठी लगी है । आचार्यस्य अध्यापनम् । यहाँ कर्ता आचार्य से षष्ठी है । संसारस्य गतिः (यहाँ कर्ता संसार में षष्ठी है) ।

8. यतश्च निर्धारणम् - जाति, गुण, क्रिया या संज्ञा द्वारा किसी एक को पूरे समुदाय से पृथक् करना "निर्धारण" कहलाता है। ऐसे निर्धारण अर्थ में समुदायवाचक शब्द से षष्ठी या सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे - नराणां नरेषु वा क्षत्रियः शूरतमः (जाति द्वारा पृथक्करण)। गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा (यहाँ गुण द्वारा निर्धारण है कि गायों में काली गाय बहुत दूध देती है)।

9. सप्तम्यधिकरणे च - अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है। अधिकरण एक पारिभाषिक शब्द है। व्याकरण में क्रिया के आधार को अधिकरण कारक कहते हैं। क्रिया का आधार वस्तुतः उसके कर्ता या कर्म का आधार होता है। इसलिए कर्ता और कर्म साधनरूप माने जाते हैं। जैसे - वृक्षे वानरः तिष्ठति। यहाँ वानर (कर्ता) का आधार वृक्ष है। स्थाल्याम् ओदनं पचति। यहाँ ओदन (कर्म) का आधार स्थाली (बटलोही) है।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित सूत्रों की व्याख्या करें -

रुच्यर्थानां प्रीयमाणः, भीत्रार्थानां भयहेतुः, षष्ठी शेषे, यतश्च निर्धारणम्, सप्तम्यधिकरणे च ।

2. अधोरेखाङ्कित पदों की विभक्ति का निर्णय करें -

विप्राय धनं ददाति । प्रासादात् चोरः पतितः । मह्यं फलं रोचते । रक्ष मां दुष्टात् ।
निबन्धस्य लेखनम् । कविषु कालिदासः श्रेष्ठः । पफलस्य माधुर्यम् ।

3. सुमेलन करें -

(क) नराणां क्षत्रियः शूरतमः

(अ) कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् ।

(ख) रामाय पफलं रोचते

(आ) ध्रुवमपायेऽपादानम्

(ग) शिक्षकात् अधीते

(इ) भीन्नार्थानां भयहेतुः

(घ) चौरात् बिभेति

(ई) आख्यातोपयोगे

(ङ) सः वृक्षात् पतति

(उ) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः

(च) भिक्षुकाय वस्त्रं ददाति

(ऊ) यतश्च निर्धारणम्

(ङ) प्रत्ययाः

शब्दों से बाद में जोड़े जाने वाले शब्दांश को प्रत्यय कहते हैं । प्रातिपदिकों से सुप् प्रत्यय, तद्धित प्रत्यय तथा स्त्रीप्रत्यय जोड़े जाते हैं । धातुओं से तिङ् प्रत्यय तथा कृत् प्रत्यय जुड़ते हैं । यहाँ जिन प्रत्ययों को हम पढ़ेंगे वे कृत्, तद्धित तथा स्त्रीप्रत्यय हैं ।

1. कृत् प्रत्ययों में यहाँ तव्यत्, अनीयर्, शतृ और शानच् निर्धारित हैं । ये धातुओं से लगते हैं । तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय 'चाहिए' 'योग्यता' के अर्थ में होते हैं ।

जैसे - पठ् + तव्यत् = पठितव्यम् (पढ़ना चाहिए या पढ़ने योग्य)

इसका प्रयोग निम्न वाक्यों में देखें -

अस्माभिः व्याकरणं पठितव्यम् (हमें व्याकरण पढ़ना चाहिए) ।

इदं पुस्तकं पठितव्यम् अस्ति (यह पुस्तक पढ़ने योग्य है) ।

अन्य उदाहरण - गम् + तव्यत् = गन्तव्यम् (जाना चाहिए)

श्रु + तव्यत् = श्रोतव्यम् (सुनना चाहिए)

भुज् + तव्यत् = भोक्तव्यम् (खाने योग्य या खाना चाहिए)

दृश् + तव्यत् = द्रष्टव्यम् (देखने योग्य या देखना चाहिए)

वच् + तव्यत् = वक्तव्यम् (कहने योग्य या कहना चाहिए)

हन् + तव्यत् = हन्तव्यम् (मारने योग्य या मारना चाहिए)

यह प्रत्यय विशेषण के रूप में होता है । इसलिए सभी लिंगों और वचनों में इसके रूप होते हैं । जैसे -

पठितव्यं पुस्तकम्, पठितव्या कथा, पठितव्यः ग्रन्थः ।

इसी अर्थ में अनीयर् प्रत्यय भी होता है ।

उदाहरण -

पठ् + अनीयर् = पठनीयम् ।

कृ + अनीयर् = करणीयम् (करने योग्य) ।

शी + अनीयर् = शयनीयम् (सोने योग्य या शय्या) ।

पूज् + अनीयर् = पूजनीयम्, पूजनीयः, पूजनीया ।

कथ् + अनीयर् = कथनीयम्, कथनीयः, कथनीया ।

ग्रह् + अनीयर् = ग्रहणीयम्, ग्रहणीयः, ग्रहणीया ।

शतृ और शानच् - ये दोनों वर्तमान काल के बोधक प्रत्यय हैं । इनका अर्थ 'करते हुए', 'कहते हुए' इत्यादि होता है । इन दोनों में अन्तर यही है कि शतृ प्रत्यय केवल परस्मैपदी धातुओं से होता है । दूसरी ओर शानच् प्रत्यय केवल आत्मनेपदी धातुओं से होता है ।

दोनों ही विशेषण के रूप में शब्दनिर्माण करते हैं, इसलिए सभी लिंगों में इनके रूप होते हैं। जैसे -

गम् + शतृ = गच्छन् (पुं०), गच्छत् (नपुं०), गच्छन्ती (स्त्री०)

अर्थ है - जाता हुआ, जाती हुई।

उदाहरण - पठ् + शतृ = पठन्, पठन्ती (यह डीप् प्रत्यय से बना है)।

दृश् + शतृ = पश्यन्, पश्यन्ती (देखती हुई)।

कथ् + शतृ = कथयन्, कथयन्ती।

धाव् + शतृ = धावन्, धावन्ती।

लभ् + शानच् = लभमानः (पाता हुआ), लभमाना (स्त्री०)

सह् + शानच् = सहमानः (सहता हुआ), सहमाना (सहती हुई)

वृत् + शानच् = वर्तमानः, वर्तमाना

विद् + शानच् = विद्यमानः, विद्यमाना

वृध् + शानच् = वर्धमानः, वर्धमाना (बढ़ती हुई)

शी + शानच् = शयानः, शयाना (सोती हुई)

मतुप् प्रत्यय - यह तद्धित प्रत्यय है, इसलिए प्रातिपदिक से लगता है। इसका अर्थ है - धारण करने वाला। इसमें मत् या वत् बचता है। इसके भी तीनों लिंगों में रूप होते हैं क्योंकि इससे बने शब्द विशेषण होते हैं। जैसे - गुण + मतुप् = गुणवत् (नपुं०), गुणवान् (पुं०), गुणवती (स्त्री०) (गुणधारण करनेवाला/वाली)।

उदाहरण - धन + मतुप् = धनवान् (पुं०), धनवती (स्त्री०)

श्री + मतुप् = श्रीमान्, श्रीमती

शक्ति + मतुप् = शक्तिमान्, शक्तिमती

रूप + मतुप् = रूपवान्, रूपवती

ठक् प्रत्यय - यह भी तद्धित प्रत्यय है। अतः प्रातिपदिक से लगता है। "से सम्बद्ध" इस अर्थ में यह प्रत्यय लगता है। इस प्रत्यय का "इक" रूप हो जाता है (ठस्येकः)।

उदाहरण - संसार + ठक् = सांसारिकम् (संसार से सम्बद्ध)

परिवार + ठक् = पारिवारिकम्

वेद + ठक् = वैदिकम्

साहित्य + ठक् = साहित्यिकम्

इस प्रत्यय से बने शब्द तीनों लिंगों में होते हैं। जैसे -

भौतिकम्, भौतिकः, भौतिकी (भूत + ठक्)।

टाप् प्रत्यय - यह स्त्रीप्रत्यय है। प्रातिपदिकों से यह स्त्रीलिंग का बोध कराने के लिए लगता है। इसमें "आ" बचता है।

उदाहरण - बाल + टाप् = बाला (लड़की)

अज + टाप् = अजा (बकरी)

अश्व + टाप् = अश्वा

सुशील + टाप् = सुशीला

मनोहर + टाप् = मनोहरा

मधुर + टाप् = मधुरा

प्रथम + टाप् = प्रथमा

ज्येष्ठ + टाप् = ज्येष्ठा

पाठक + टाप् = पाठिका

सेवक + टाप् = सेविका

नायक + टाप् = नायिका

डीप् प्रत्यय - यह भी स्त्रीप्रत्यय है । अतः प्रातिपदिक शब्दों से लगता है । इसमें 'ई' बचता है । कई प्रकार के शब्दों से यह लगाया जाता है । जैसे -

1. नकारान्त शब्द से - कारिन् + डीप् = कारिणी (करने वाली)

ग्राहिन् + डीप् = ग्राहिणी (ग्रहण करने वाली)

शोभिन् + डीप् = शोभिनी (शोभायुक्त)

धनिन् + डीप् = धनिनी

गृहिन् + डीप् = गृहिणी

यशस्विन् + डीप् = यशस्विनी

2. ऋकारान्त शब्द से - धातृ + डीप् = धात्री (धारण करने वाली)

दातृ + डीप् = दात्री (देने वाली)

कर्तृ + डीप् = कर्त्री (करने वाली)

3. वत्-मत् वाले शब्द से- श्रीमत् + डीप् = श्रीमती
 गुणवत् + डीप् = गुणवती
 कृतवत् + डीप् = कृतवती (किया)
 गतवत् + डीप् = गतवती (गयी)
 बुद्धिमत् + डीप् = बुद्धिमती

अभ्यासः

1. प्रत्यय किसे कहते हैं ? तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय से बने कुछ शब्दों को लिखें ।
2. शतृ और शानच् प्रत्ययों में क्या अन्तर है ?
3. स्त्रीप्रत्यय किसे कहते हैं ? टाप् और डीप् प्रत्ययों से बने कुछ पदों को लिखें ।
4. रिक्त स्थान की पूर्ति करें -

भवन् = भू + ।

कथयन्ती = कथ + ।

..... = शी + शानच् ।

धनवान् = धन + ।

रूपवती = रूप + ।

..... = वेद + ठक् ।

| | |
|-------------|-------------------|
| | = साहित्य + ठक् । |
| | = अज + टाप् । |
| पठनीयम् | = पठ् + |
| कथनीयम् | = + । |
| | = हन् + तव्यत् । |
| द्रष्टव्यम् | = + । |

5. निम्नलिखित पदों का प्रकृति-प्रत्यय-विभाग करें -

| | |
|-------------|-------------------|
| गन्तव्यम् | = |
| शयनीयम् | = |
| गच्छन्ती | = |
| धावन्ती | = |
| कर्त्री | = |
| शयाना | = |
| रूपवान् | = |
| सांसारिकम् | = |
| भौतिकः | = |
| पारिवारिकम् | = |
| नायिका | = |
| ज्येष्ठा | = + । |